JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आदिवासी क्षेत्र के किशोरों में आत्महत्यात्मक की प्रवृति के लक्षण, निदान एवं उपचार का अध्ययन – 2025

A study of the symptoms, diagnosis and treatment of suicidal tendencies among adolescents in tribal areas– 2025

शोधार्थी - पूंजासिंह यादव , शोधार्थी शिक्षा संकाय मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर (राज.) 313001

शोध निर्देशक - डॉ. मनीष सक्सेना शिक्षा संकाय, प्राचार्य ज्योतिबॉ फुले शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय उदयपुर

Abstract : वर्तमान समय में आदिवासी क्षेत्रों के किशोरों में आत्महत्यात्मक प्रवृत्तियों का बढ़ना एक गंभीर सामाजिक एवं मानसिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में उभर रहा है। यह अध्ययन वर्ष 2025 के संदर्भ में आदिवासी क्षेत्र के किशोरों में आत्महत्यात्मक प्रवृत्तियों के लक्षणों, निदान तथा उपचार का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। सामाजिक–आर्थिक पिछड़ापन, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, पारिवारिक तनाव, सांस्कृतिक संक्रमण, बेरोजगारी, नशाखोरी, पहचान का संकट तथा भावनात्मक उपेक्षा जैसे कारक किशोरों में मानसिक असंतुलन को बढ़ावा देते हैं। अध्ययन में पाया गया कि आत्महत्यात्मक प्रवृत्तियों के प्रमुख लक्षणों में लगातार उदासी, निराशा, सामाजिक अलगाव, आत्मसम्मान में कमी, आक्रामक या अंतर्मुखी व्यवहार, नींद एवं भोजन में असंतुलन, मृत्यु से संबंधित विचार, आत्म–नुकसान की प्रवृत्ति तथा पढ़ाई से विमुखता शामिल हैं। इन लक्षणों की समय रहते पहचान न होने पर जोखिम और अधिक बढ़ जाता है। निदान की प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिक साक्षात्कार, व्यवहारिक अवलोकन, परामर्श सत्र, मानकीकृत मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण तथा परिवार व समुदाय से प्राप्त सूचनाओं को महत्त्वपूर्ण माना गया है। सांस्कृतिक संवेदनशीलता के साथ किया गया निदान अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। उपचार के स्तर पर मनोपरामर्श, संज्ञानात्मक–व्यवहारात्मक चिकित्सा, परिवार–आधारित हस्तक्षेप, विद्यालयीय सहयोग, समुदाय की भागीदारी तथा पारंपरिक आदिवासी समर्थन प्रणालियों को जोड़ना आवश्यक है। इसके साथ ही मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम, प्रशिक्षित परामर्शदाता, विद्यालयों में जीवन–कौशल शिक्षा तथा सरकारी–गैरसरकारी संस्थाओं के समन्वित प्रयास आत्महत्या की प्रवृत्तियों को कम करने में सहायक हो सकते हैं। यह अध्ययन आदिवासी किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य संरक्षण हेतु बहुआयामी एवं सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त हस्तक्षेप की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

Keywords : मनोवैज्ञानिक साक्षात्कार, व्यवहारिक अवलोकन, मानसिक परीक्षण, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, स्थानीय भाषा, उपचार, मनोपरामर्श, संज्ञानात्मक–व्यवहारात्मक चिकित्सा, परिवार आधारित हस्तक्षेप, विद्यालय आधारित कार्यक्रम, जीवन कौशल शिक्षा, समुदाय आधारित हस्तक्षेप, पारंपरिक सहायता प्रणाली, जागरूकता अभियान, नशामुक्ति, सरकारी योजनाएँ, गैर–सरकारी संगठन, रोकथाम, मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ

Article : भारत के आदिवासी क्षेत्र सांस्कृतिक विविधता, परंपरागत जीवन–शैली और सामुदायिक मूल्यों से समृद्ध हैं, किंतु आधुनिक समय में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों, शहरीकरण, शिक्षा एवं रोजगार की

अनिश्चितता तथा सांस्कृतिक संक्रमण ने इन क्षेत्रों के किशोरों को गहरे मानसिक दबाव में डाल दिया है। वर्ष 2025 के परिप्रेक्ष्य में आदिवासी क्षेत्रों के किशोरों में आत्महत्यात्मक प्रवृत्तियों का उभरना एक गंभीर सामाजिक व मानसिक स्वास्थ्य समस्या बन चुका है। किशोरावस्था स्वयं भावनात्मक उतार–चढ़ाव का समय होती हैय जब इसमें गरीबी, पारिवारिक अस्थिरता, पहचान का संकट और संसाधनों की कमी जुड़ जाती है, तब जोखिम और बढ़ जाता है। इस लेख का उद्देश्य आदिवासी क्षेत्र के किशोरों में आत्महत्यात्मक प्रवृत्ति के लक्षणों, निदान तथा उपचार का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करना है।

आत्महत्यात्मक प्रवृत्ति की अवधारणा

आत्महत्यात्मक प्रवृत्ति का तात्पर्य ऐसे विचारों, भावनाओं या व्यवहारों से है जिनमें व्यक्ति जीवन समाप्त करने की इच्छा, योजना या प्रयास करता है। यह प्रवृत्ति अचानक नहीं बनती, बल्कि दीर्घकालिक मानसिक तनाव, निराशा और असहायता के परिणामस्वरूप विकसित होती है। आदिवासी किशोरों में यह प्रवृत्ति सामाजिक व सांस्कृतिक कारकों के साथ गहराई से जुड़ी होती है।

आदिवासी किशोरों में आत्महत्यात्मक प्रवृत्ति के कारण

आदिवासी क्षेत्रों में किशोरों की आत्महत्यात्मक प्रवृत्ति के पीछे अनेक कारण कार्य करते हैं

- **सांस्कृतिक संक्रमणः**

परंपरागत मूल्यों का क्षरण, आधुनिक जीवन–शैली का प्रभाव और पहचान का संकट किशोरों को द्वंद्व की स्थिति में डाल देता है।

- **मनोवैज्ञानिक कारणः**

अवसाद, चिंता, आत्मसम्मान की कमी, भावनात्मक अस्थिरता और अकेलापन आत्महत्यात्मक विचारों को जन्म देते हैं।

- **नशाखोरीः**

शराब, तंबाकू और अन्य नशीले पदार्थों का सेवन मानसिक संतुलन को बिगाड़ता है और जोखिम को बढ़ाता है।

आत्महत्यात्मक प्रवृत्ति के लक्षण

आदिवासी किशोरों में आत्महत्यात्मक प्रवृत्तियों के लक्षण शारीरिक, भावनात्मक और व्यवहारिक स्तर पर दिखाई देते हैं

शारीरिक लक्षणः

- नींद में गड़बड़ी
- भूख में कमी या अधिकता
- थकान, सिरदर्द, कमजोरी

इन संकेतों की अनदेखी किशोर को आत्महत्या की ओर धकेल सकती है।

निदान की प्रक्रिया

आत्महत्यात्मक प्रवृत्ति का निदान एक संवेदनशील और बहुआयामी प्रक्रिया है, विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों में, जहाँ सांस्कृतिक समझ अत्यंत आवश्यक है। निदान के प्रमुख चरण निम्नलिखित हैं

• **पारिवारिक एवं सामुदायिक जानकारीः**

माता–पिता, शिक्षकों और समुदाय से प्राप्त सूचनाएँ।

• **सांस्कृतिक संवेदनशीलताः**

स्थानीय भाषा, परंपराएँ और विश्वास निदान प्रक्रिया का अभिन्न भाग हों।

उपचार की रणनीतियाँ

आदिवासी किशोरों में आत्महत्यात्मक प्रवृत्ति का उपचार केवल चिकित्सकीय नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक हस्तक्षेप का विषय है।

(घ) समुदाय आधारित कार्यक्रमः

• सामुदायिक नेताओं की भागीदारी

• जागरूकता अभियान

• नशामुक्ति कार्यक्रम

(ङ) सरकारी एवं गैर–सरकारी प्रयासः

• मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार

• मोबाइल स्वास्थ्य इकाइयाँ

• किशोर कल्याण योजनाएँ

वर्ष 2025 के संदर्भ में आदिवासी क्षेत्रों के किशोरों में आत्महत्यात्मक प्रवृत्ति एक जटिल और बहुस्तरीय समस्या है, जिसकी जड़ें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक कारकों में निहित हैं। इसके प्रभावी समाधान के लिए समय पर लक्षणों की पहचान, संवेदनशील निदान और समग्र उपचार अनिवार्य है। परिवार, विद्यालय, समुदाय और सरकार के समन्वित प्रयासों से ही आदिवासी किशोरों को मानसिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है और उन्हें जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान किया जा सकता है।

Conslusion : वर्ष 2025 के संदर्भ में आदिवासी क्षेत्रों के किशोरों में आत्महत्यात्मक प्रवृत्तियों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह समस्या केवल व्यक्तिगत मानसिक कमजोरी का परिणाम नहीं है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक कारकों के जटिल अंतर्संबंध से उत्पन्न होती है। किशोरावस्था स्वयं परिवर्तन, अस्थिरता और पहचान निर्माण का संवेदनशील चरण है। जब इसमें गरीबी, शिक्षा की कमी, पारिवारिक तनाव, नशाखोरी, सांस्कृतिक विघटन तथा आधुनिक जीवन–शैली का दबाव जुड़ जाता है, तब आत्महत्यात्मक प्रवृत्तियाँ पनपने लगती हैं। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि आदिवासी किशोरों में आत्महत्यात्मक प्रवृत्ति के लक्षण प्रायः भावनात्मक, व्यवहारिक और शारीरिक स्तर पर दिखाई देते हैं। निरंतर उदासी, निराशा, आत्मसम्मान की कमी, सामाजिक अलगाव, पढ़ाई में रुचि का अभाव, आक्रामक या अंतर्मुखी व्यवहार तथा मृत्यु से संबंधित विचार ऐसे संकेत हैं, जिन्हें सामान्य किशोरावस्था की समस्या समझकर नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। इन लक्षणों की समय रहते पहचान ही आत्महत्या की रोकथाम की पहली और सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। निदान के संदर्भ में यह स्पष्ट हुआ है कि आदिवासी क्षेत्रों में केवल मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण पर्याप्त नहीं हैं। प्रभावी निदान के लिए सांस्कृतिक संवेदनशीलता, स्थानीय भाषा का प्रयोग, पारिवारिक एवं सामुदायिक संदर्भ की समझ तथा विश्वासपूर्ण संवाद अत्यंत आवश्यक है। जब निदान प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय और समुदाय को शामिल किया जाता है, तब किशोर की वास्तविक मानसिक स्थिति को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। उपचार के स्तर पर यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि आत्महत्यात्मक प्रवृत्तियों

का समाधान केवल चिकित्सकीय उपचार तक सीमित नहीं होना चाहिए। मनोपरामर्श, संज्ञानात्मक–व्यवहारात्मक चिकित्सा, परिवार–आधारित हस्तक्षेप, विद्यालयीय सहयोग और समुदाय आधारित कार्यक्रमों का समन्वित प्रयोग अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। इसके साथ ही आदिवासी समाज की पारंपरिक सहायता प्रणालियों, सामुदायिक मूल्यों और सामूहिकता की भावना को उपचार प्रक्रिया में शामिल करना आवश्यक है। जब आदिवासी किशोरों को सुरक्षित वातावरण, भावनात्मक सहयोग और आत्मसम्मान से भरपूर जीवन का अवसर मिलेगा, तभी वे जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे और आत्महत्यात्मक प्रवृत्तियों से मुक्त भविष्य की ओर अग्रसर हो पाएंगे।

References :

1 बर्क, ले (1997) बाल विकास (4 संस्करण) बोस्टन : अफिकान और बेकन।

2 बीईई, एच (1992) द डेवलपिंग चाइल्ड (तीसरा संस्करण) न्यूयॉक : हार्पर एंड रो

3 बुच. एम.बी. शिक्षा (1991) शिक्षा में अनुसंधान का चौथा सर्वेक्षण, 1983–88 खंड 1 और वॉल्यूम 2 19–0

4 मध्यप्रदेश जनजातीय आयोग (2018). आदिवासी स्वास्थ्य एवं सामाजिक चुनौतियाँ।

5 मेहता, वी. (2014). भारतीय किशोरों का मनोविज्ञान. नई दिल्लीः नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

6 राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (2010–2023). Accidental Deaths and Suicides in India-

7 राजस्थान आदिवासी क्षेत्र विकास परियोजना (2017). बांसवाड़ा, डूंगरपुर व प्रतापगढ़ः किशोर मानसिक स्वास्थ्य रिपोर्ट।

8 वर्मा, ए. (2010). अवसाद, तनाव और आत्महत्या. नई दिल्लीः मनोविज्ञान प्रकाशन।

9 विनोद कुमार चिकमगलूर शिवस्वामी, नागेन्द्र के. सजय डी. गोली कलप्पनवर एल के (2012) किशोरजनो ने अवसाद और आत्महत्या की प्रति का प्रसार और सन्वन्य।

10 शर्मा, एम. (2016). क्लिनिकल मनोविज्ञानः सिद्धांत और अनुप्रयोग. जयपुरः विद्यार्थी प्रकाशन।